10 सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

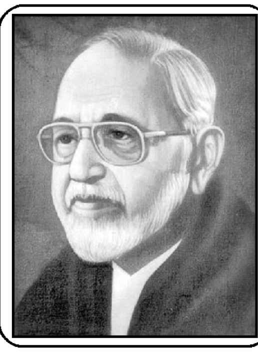

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' का जन्म मार्च, सन् 1911 ई० में हुआ था। इनका बचपन अपने विद्वान् पिता के साथ कश्मीर, बिहार और मद्रास में व्यतीत हुआ था। इन्होंने मद्रास और लाहौर में शिक्षा प्राप्त की। बी० एस-सी० करने के बाद एम० ए० (अंग्रेजी) की पढ़ाई के समय क्रान्तिकारी आन्दोलन में फरार हुए और सन् 1930 ई० में गिरफ्तार हुए। चार वर्ष जेल में और दो वर्ष नजरबन्द रहना पड़ा। किसान आन्दोलन में भाग लिया। 'सैनिक', 'विशाल भारत', 'प्रतीक' और अंग्रेजी त्रैमासिक 'वाक्' का सम्पादन किया। कुछ वर्ष आकाशवाणी में रहे और सन् 1943 से 1946 तक सेना में रहे। घुमक्कड़ प्रकृति के वशीभूत होकर अनेक बार अनेक देशों की यात्राएँ कीं। समाचार साप्ताहिक 'दिनमान' का सम्पादन किया। इनका निधन 4 अप्रैल, सन् 1987 ई० को हुआ।

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—मार्च, सन् 1911 ई०।
- **जन्म-स्थान**—कश्मीर।
- **पिता**—हीरानंद शास्त्री।
- वत्स गोत्रीय होने के कारण वात्स्यायन कहलाये।
- **सम्पादन :** सैनिक, विशाल भारत, साप्ताहिक दिनमान, नया प्रतीक, वाक।
- **भाषा :** क्लिष्ट एवं संस्कृतनिष्ठ पदावली।
- **शैली :** छायावादी लाक्षणिक शैली, भावात्मक शैली, प्रयोगवादी सपाट शैली।
- **प्रमुख रचनाएँ**—आँगन के पार द्वार, हरी घास पर क्षण भर, सुनहले शैवाल, विपथगा, परंपरा, शेखर : एक जीवनी एवं अरे, यायावर रहेगा याद आदि।
- **मृत्यु**—4 अप्रैल, सन् 1987 ई०।

अज्ञेयजी ने जब लिखना आरम्भ किया तब प्रगतिवादी आन्दोलन जोरों पर था। कविता छायावादी प्रभाव से मुक्त होकर अन्तर्मुखी प्रवृत्ति छोड़ कर बाहरी जगत् की ओर ध्यान देने लगी थी। इस प्रगतिवादी काव्य का ही एक रूप प्रयोगवादी काव्यान्दोलन में प्रतिफलित हुआ। इसका प्रवर्तन 'तारसप्तक' के द्वारा अज्ञेय सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन ने किया। इस काव्य-संकलन में सात प्रयोगवादी कवियों की कविताएँ संगृहीत हैं। 'तारसप्तक' की भूमिका इस नये आन्दोलन का घोषणा-पत्र हुई। अज्ञेय ने अपने सूक्ष्म कलात्मक बोध, व्यापक जीवन अनुभूति और समृद्ध कल्पना शक्ति तथा सहज लेकिन संकेतमयी अभिव्यंजना के द्वारा परिचित भावनाओं के नूतन और अनछुए रूपों को उजागर किया। परम्परागत घिसी-पिटी राजनीति, सुधार और क्रान्ति के दुहराये गये नारों के स्थान पर मानवीय और प्राकृतिक जगत् के स्पन्दनों को बोलचाल की भाषा में वार्त्तालाप एवं स्वगत शैली में व्यक्त किया। परम्परागत आलंकारिकता और लाक्षणिकता के आतंक से काव्यशिल्प को मुक्त कर नवीन काव्यधारा का प्रवर्तन किया।

'आँगन के पार द्वार', 'अरी ओ करुणा प्रभामय', 'हरी घास पर क्षण भर', 'इंद्र धनु रौंदे हुए ये', 'पूर्वा', 'सुनहले शैवाल', 'कितनी नावों में कितनी बार', 'बावरा अहेरी', 'इत्यलम्', 'चिन्ता', 'पहरे में सन्नाटा बुनता हूँ' आदि अज्ञेय की प्रमुख रचनाएँ हैं।

निजी अनुभूति को अपने बनाये हुए शिल्प के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयत्न अज्ञेय ने किया, जो सहज ही विवाद का कारण बन गया और आज काव्य क्षेत्र में उनके स्थापित होने पर भी मतभेद से मुक्त नहीं हो सका। मानव नियति और प्राकृतिक सौन्दर्य के घिसे-पिटे वक्तव्यों और मढ़ी-मढ़ाई शैली से हटकर अज्ञेय ने अपने अन्तर्मन को वाणी देकर बड़े साहस का काम किया। इन्होंने समष्टि को महत्त्वपूर्ण अवश्य माना, किन्तु साथ ही व्यक्ति की निजता या महत्ता को अखण्डित रखा। व्यक्ति-मन की गरिमा को इन्होंने फिर से स्थापित किया और उसके विकास को अनदेखा करने से जो गम्भीर संकट उपस्थित होता जा रहा था, उसकी ओर ध्यान आकृष्ट किया। कवि, कथाकार, निबन्धकार, समीक्षक, घुमक्कड़, गम्भीर अध्येता, नाटककार, पत्रकार तथा छायाकार होने के कारण अज्ञेय के बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न व्यक्तित्व की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति इनकी रचनाओं में प्राप्त होती है। इनका विचार है कि बाह्य आवश्यकताओं की पूर्ति ही मनुष्य के लिए पर्याप्त नहीं है, अपितु इसके अन्तःकरण का विकास और समृद्धि भी उतनी ही आवश्यक है। असंस्कृति या अविकसित मानस का व्यक्ति भौतिक सम्पन्नता से मुक्त होने पर भी अपने लिए तथा समाज के लिए समस्या बना ही रहता है। इसीलिए केवल शरीर की आवश्यकता की पूर्ति पर्याप्त नहीं है। अज्ञेयजी निरन्तर व्यक्ति के मन के विकास की यात्रा को महत्त्वपूर्ण मानकर चलते रहे हैं।

अज्ञेय के अतुकान्त छन्दों में सजग शब्द-प्रयोग भाव और विचार की गहराई को खोलता हुआ-सा लगता है। गम्भीर प्रकृति का शिक्षित और सुसंस्कृत पाठक ही इनके काव्य को ग्रहण कर पाता है। अज्ञेय निरन्तर चिन्तन और मनन के कवि रहे हैं। बाह्य जगत् से उद्‌बुद्ध भावों एवं विचारों को वे अपने मानस में रचने-पचने देते हैं और अपने व्यक्तित्व का सहज अंश बन जाने पर ही वे उन्हें अभिव्यक्ति देते हैं।

मैंने आहुति बनकर देखा

[जीवन केवल सुखों के संचय का नाम नहीं है, बल्कि उसकी वास्तविक शक्ति कष्टों, विघ्न-बाधाओं और विरोधी परिस्थितियों के साथ संघर्ष करने से ही विकसित होती है। निम्न काव्य-पंक्तियों में कवि का भी यही दृष्टिकोण है।]

मैं कब कहता हूँ जग मेरी दुर्धर गति के अनुकूल बने,
मैं कब कहता हूँ जीवन-मरु नंदन-कानन का फूल बने?
काँटा कठोर है, तीखा है, उसमें उस की मर्यादा है,
मैं कब कहता हूँ वह घटकर प्रांतर का ओछा फूल बने?
मैं कब कहता हूँ मुझे युद्ध में कहीं न तीखी चोट मिले?
मैं कब कहता हूँ प्यार करूँ तो मुझे प्राप्ति की ओट मिले?
मैं कब कहता हूँ विजय करूँ मेरा ऊँचा प्रासाद बने?
या पात्र जगत की श्रद्धा की मेरी धुँधली-सी याद बने?
पथ मेरा रहे प्रशस्त सदा क्यों विकल करे यह चाह मुझे?
नेतृत्व न मेरा छिन जावे क्यों इसकी हो परवाह मुझे?
मैं प्रस्तुत हूँ चाहे मिट्टी जनपद की धूल बने।
फिर उस धूली का कण-कण भी मेरा गति-रोधक शूल बने!
अपने जीवन का रस देकर जिसको यत्नों से पाला है—
क्या वह केवल अवसाद-मलिन झरते आँसू की माला है?
वे रोगी होंगे प्रेम जिन्हें अनुभव-रस का कटु प्याला है—
वे मुर्दे होंगे प्रेम जिन्हें सम्मोहनकारी हाला है
मैंने विदग्ध हो जान लिया, अन्तिम रहस्य पहचान लिया—
मैंने आहुति बन कर देखा यह प्रेम यज्ञ की ज्वाला है!
मैं कहता हूँ मैं बढ़ता हूँ, मैं नभ की चोटी चढ़ता हूँ
कुचला जाकर भी धूली-सा आँधी सा और उमड़ता हूँ
मेरा जीवन ललकार बने, असफलता ही असि-धार बने
इस निर्मम रण में पग-पग का रुकना ही मेरा वार बने!
भव सारा तुझको है स्वाहा सब कुछ तप कर अंगार बने—
तेरी पुकार सा दुर्निवार मेरा यह नीरव प्यार बने!

('पूर्वा' से)

हिरोशिमा

[द्वितीय विश्वयुद्ध के अन्तिम चरण में जापान के हिरोशिमा नगर पर अमेरिका ने परमाणु बम गिराकर भीषण नर-संहार किया था। कवि ने इस दुर्घटना का मार्मिक वर्णन निम्न काव्य-पंक्तियों में किया है।]

एक दिन सहसा
सूरज निकला
अरे क्षितिज पर नहीं
नगर के चौकः

धूप बरसी
पर अन्तरिक्ष से नहीं
फटी मिट्टी से।

छायाएँ-मानव-जन की
दिशाहीन
सब ओर पड़ीं—वह सूरज
नहीं उगा था पूरब में, वह
बरसा सहसा
बीचो-बीच नगर केः
काल-सूर्य के रथ के
पहियों के ज्यों अरे टूट कर
बिखर गये हों
दसों दिशा में!
कुछ क्षण का वह उदय-अस्त!
केवल एक प्रज्ज्वलित क्षण की
दृश्य सोख लेने वाली दोपहरी
फिर?

छायाएँ मानव-जन की
नहीं मिटीं लम्बी हो-हो कर;
मानव ही सब भाप हो गये।
छायाएँ तो अभी लिखी हैं
झुलसे हुए पत्थरों पर
उजड़ी सड़कों की गच पर।

मानव का रचा हुआ सूरज
मानव को भाप बना कर सोख गया।
पत्थर पर लिखी हुई यह
जली हुई छाया
मानव की साखी है।

('सुनहले शैवाल' से)

अभ्यास प्रश्न

पद्यांश पर आधारित प्रश्न

1. पद्यांशों पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(मैंने आहुति बनकर देखा)

(क) मैं कब कहता हूँ जग मेरी दुर्धर गति के अनुकूल बने,
मैं कब कहता हूँ जीवन-मरु नंदन-कानन का फूल बने?

काँटा कठोर है, तीखा है, उसमें उसकी मर्यादा है,
मैं कब कहता हूँ वह घटकर प्रांतर का ओछा फूल बने?
मैं कब कहता हूँ मुझे युद्ध में कहीं न तीखी चोट मिले?
मैं कब कहता हूँ प्यार करूँ तो मुझे प्राप्ति की ओट मिले?
मैं कब कहता हूँ विजय करूँ मेरा ऊँचा प्रासाद बने?
या पात्र जगत की श्रद्धा की मेरी धुँधली-सी याद बने?
पथ मेरा रहे प्रशस्त सदा क्यों विकल करे यह चाह मुझे?
नेतृत्व न मेरा छिन जावे क्यों इसकी हो परवाह मुझे?
मैं प्रस्तुत हूँ चाहे मिट्टी जनपद की धूल बने।
फिर उस धूली का कण-कण भी मेरा गति-रोधक शूल बने! **[2020 ZH]**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए।
(ii) कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि कैसा व्यक्ति वास्तविक जीवन जीता है?
(iii) जीवन की सार्थकता किसमें निहित है?
(iv) इस पद्यांश में कवि का क्या संदेश है?
(v) रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।
(vi) 'काँटा कठोर है, तीखा है, उसमें उसकी मर्यादा है' का आशय स्पष्ट कीजिए।
(vii) जीवन मरु में कौन-सा अलंकार है?
(viii) मैं किसकी कामना नहीं करता?

(ख) अपने जीवन का रस देकर जिसको यत्नों से पाला है—
क्या वह केवल अवसाद-मलिन झरते आँसू की माला है?
वे रोगी होंगे प्रेम जिन्हें अनुभव-रस का कटु प्याला है—
वे मुर्दे होंगे प्रेम जिन्हें सम्मोहनकारी हाला है
मैंने विदग्ध हो जान लिया, अन्तिम रहस्य पहचान लिया—
मैंने आहुति बन कर देखा यह प्रेम यज्ञ की ज्वाला है!
मैं कहता हूँ मैं बढ़ता हूँ, मैं नभ की चोटी चढ़ता हूँ
कुचला जाकर भी धूली-सा आँधी सा और उमड़ता हूँ
मेरा जीवन ललकार बने, असफलता ही असि-धार बने
इस निर्मम रण में पग-पग का रुकना ही मेरा वार बने!
भव सारा तुझको है स्वाहा सब कुछ तप कर अंगार बने—
तेरी पुकार सा दुर्निवार मेरा यह नीरव प्यार बने!

अथवा वे रोगी होंगे ..... मेरा वार बने। **[2020 ZM]**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए।
(ii) प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने अपनी कैसी इच्छा को व्यक्त किया है?
(iii) कवि ने धूल से क्या प्रेरणा ली है?
(iv) इन पंक्तियों के आधार पर कवि का दृष्टिकोण स्पष्ट कीजिए।
(v) रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।
(vi) हाला तथा असि-धार शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
(vii) कवि किसे रोगी मानता है?
(viii) प्रेम जिनके लिए 'सम्मोहनकारी हाला' है, कवि उन्हें क्या मानता है?

(ग) <u>वे रोगी होंगे प्रेम जिन्हें अनुभव-रस का कटु प्याला है–</u>
<u>वे मुर्दे होंगे प्रेम जिन्हें सम्मोहनकारी हाला है</u>
मैंने विदग्ध को जान लिया; अन्तिम रहस्य पहचान लिया–
मैंने आहुति बनकर देखा यह प्रेम यज्ञ की ज्वाला है।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के कवि और शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या लिखिए।
(iii) किसको संवेदनाहीन मृतक की संज्ञा दी गयी है?
(iv) कवि ने रोगी किसे बताया है?
(v) कवि को प्रेम यज्ञ की ज्वाला कब दिखाई दी?

(हिरोशिमा)

(घ) छायाएँ-मानव-जन की
दिशाहीन
सब ओर पड़ीं—वह सूरज
नहीं उगा था पूरब में, वह
बरसा सहसा
बीचो-बीच नगर केः
काल-सूर्य के रथ के
पहियों के ज्यों अरे टूट कर
बिखर गये हों
दसों दिशा में!
कुछ क्षण का वह उदय-अस्त!
<u>केवल एक प्रज्ज्वलित क्षण की</u>
<u>दृश्य सोख लेने वाली दोपहरी</u> **[2019 CT, CV]**

प्रश्न– (i) वह सूर्य किस दिशा में उदित हुआ था?
(ii) दश दिशाएँ कौन-कौन सी हैं?
(iii) 'काल सूर्य के रथ' में कौन-सा अलंकार है?
(iv) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(v) इस पद्यांश के पाठ तथा उसके रचयिता का नामोल्लेख कीजिए।
(vi) मानव-जन की छायाएँ किस दिशा में पड़ीं?

(ङ) <u>मानव का रचा हुआ सूरज</u>
<u>मानव को भाप बनाकर सोख गया।</u>
पत्थर पर लिखी हुई यह
जली हुई छाया
मानव की साखी है।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा उपर्युक्त पद्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रस्तुत पद्यांश में कौन-सा रस है?
(iv) आज भी महाविनाश के गवाह कौन हैं?
(v) मानव का रचा हुआ सूरज क्या है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नांकित काव्य-सूक्तियों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए—
   (क) वे मुर्दे होंगे प्रेम जिन्हें सम्मोहन-कारी हाला है।
   (ख) मैंने आहुति बनकर देखा यह प्रेम यज्ञ की ज्वाला है।
   (ग) क्या वह केवल अवसाद-मलिन झरते आँसू की माला है?
   (घ) दृश्य सोख लेने वाली दुपहरी।
   (ङ) मैं कब कहता हूँ जीवनमरु नन्दन-कानन का फूल बने।
2. अज्ञेय का जीवन-परिचय लिखिए। **[2017 MB]**

   अथवा

   सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' का साहित्यिक परिचय देते हुए उनके प्रमुख रचनाओं पर प्रकाश डालिए। **[2020 ZL, ZN]**
3. सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' की काव्यगत विशेषताओं का संक्षेप में उल्लेख कीजिए। **[2017 MB]**
4. "अज्ञेयजी ने हिन्दी प्रयोगवादी काव्य-धारा का प्रवर्तन किया था।" उनकी रचनाओं के आधार पर इस कथन को स्पष्ट कीजिए।
5. "अज्ञेयजी ने काव्य विषय तो नये दिये ही हैं, नये प्रकार के उपमानों की भी योजना की है।" स्वपठित रचनाओं के आधार पर इस कथन को समझाइये।
6. "अज्ञेयजी ने हिन्दी कविता का नव संस्कार किया है।" आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं?
7. सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों पर प्रकाश डालिए। **[2017 ME, MF]**
8. अज्ञेय की काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
9. अज्ञेय का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों तथा साहित्यिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'मैंने आहुति बनकर देखा' कविता का भाव अपने शब्दों में बताइए।
2. 'हिरोशिमा' कविता में कवि ने युग को क्या संदेश दिया है?

   अथवा

   अज्ञेय जी की 'हिरोशिमा' शीर्षक कविता में व्यक्त सन्देश को अपनी भाषा में स्पष्ट कीजिए।
3. प्रयोगवादी कविता का जन्म किन परिस्थितियों में हुआ?
4. अज्ञेय के अतिरिक्त किसी एक अन्य प्रयोगवादी कवि का परिचय दीजिए।
5. अज्ञेय की रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

काव्य-सौन्दर्यात्मक प्रश्न

1. निम्नांकित काव्य-पंक्तियों में काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
   (क) इस निर्मम रण में पग-पग का रुकना ही मेरा वार बने।
   (ख) मानव का रचा हुआ सूरज, मानव को भाप बनाकर सोख गया।
2. अनुप्रास एवं उपमा अलंकार का लक्षण बताते हुए प्रस्तुत शीर्षक कविता से एक-एक उदाहरण दीजिए।